धर्म चरित्र निर्माण में उपयोगी

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सुधार व्यक्ति से होता है और परिवार समाज और राष्ट्र तक विस्तृत होता है। सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा की उक्ति इस तथ्य को प्रमाणित करती है। व्यक्ति के सुधार से राष्ट्र का सुधार होता है। सम्यक् दर्शन सही दिशा में चलने से चरित्र निर्माण होता है। श्रद्धा दृष्टि सम्यक् ज्ञान से चरित्र निर्माण होता है। इसलिए ज्ञान के सार को आचार कहा गया है। उपदेश सुनने से नहीं बल्कि जीवन में धारण करने से चरित्र निर्माण होता है। चरित्र बहुत उपयोगी है। चरित्र के सुधार से मानव का सुधार होता है। जिसका चरित्र अच्छा होता है उस व्यक्ति का समाज में बहुत महत्व है। जब तक चरित्र उच्च आदर्शों से युक्त रहता है लोग ईश्वर के समान उसका सम्मान करते हैं। किन्तु जैसे चरित्र दागदार हुआ उसका पतन हो जाता है। चरित्र निर्माण एक आदर्श है। धर्म के द्वारा चरित्र को सुधारा जाता है। अग्नि में हाथ डालने से हाथ जल जाता है और पानी में हाथ डालने पर शीतलता महसूस होती हैं ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए कि अग्नि का धर्म उष्णता है और जल का धर्म शीतलता। जिस वस्तु का जैसा स्वभाव रहता है वह वैसा ही कार्य ही करेगा। शरीर में आत्मा का वास है। शरीर भौतिक तत्वों का समवाय है। भौतिक तत्व और आत्मा दोनों पृथक–पृथक है किन्तु जब तक संयोग रहता है आत्मा शरीर को संचालित करता है। आत्मा के निकल जाने पर मिट्टी का चोला मिट्टी में मिल जाता है। अतः धर्म आत्मा के समान है। इसी के द्वारा संसार चलता है। धर्म को उत्कृष्ट मंगल कहा गया है– धम्मो मंगल मुक्किट्ठं अहिंसा संयमो तवो। धर्म के माध्यम से सबका कल्याण होता है। अहिंसा संयम और तप उत्कृष्ट मंगल है। किसी को दुःख न देना धर्म है। मानव धर्म ही अहिंसावादी धर्म है। धर्म और अहिंसा एक दूसरे के पूरक है। संयम भारती संस्कृति का उत्कृष्ट शब्द है। सर्वभूतेषु संयमः अहिंसा सभी प्राणियों की रक्षा करना अहिंसा है। सोते जागते उठते बैठते संयम की आवश्यकता है। सभी को अहिंसक होना

चाहिए। हर मार्ग में संयम पूर्वक गमन करना चाहिए इससे मुक्ति का द्वार खुलता है। तप से भीतर की शुद्धि होती है। भीतर शुद्ध होने से भावशुद्ध होता है और भावशुद्ध से विचार शुद्ध हो जाता है।

सादा जीवन उच्च विचार भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र है। यहां के ऋषियों, मुनियों, महर्षियों ने एकान्त में रहकर कन्दमूल फल खाकर नदियों और झरनों का पानी पीकर स्वस्थ तन, मन के द्वारा जो चिन्तन दिया है वह भारतीय संस्कृति का आधार स्तम्भ है। महर्षि वेदव्यास, महर्षि वाल्मीकि, भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, गोस्वामी तुलसीदास जैसे महापुरुषों ने जो विचार दिये है आज पूरा भारत उसी पर चल रहा है। इन महापुरुषों ने राजमहल को त्यागकर साधारण जीवन जीने का निर्णय लिया। इन्होंने संसार के सत्य को खोजा और सामान्य जनता में इसका उपदेश किया। उन्हीं के दिखाये हुए मार्ग पर आज पूरा विश्व चल रहा है। मानव जीवन बड़ा ही अमूल्य है। मानव जीवन को पाकर यदि कोई इसको व्यर्थ में गंवा दे तो उसका जीवन निरर्थक ही रहता है। बड़े भाग्य मानुष तन पावा अर्थात् मनुष्य का शरीर बड़े पुण्य कर्म के पश्चात् ही प्राप्त होता है। मानव जीवन बड़ा ही दुर्लभ है। चौरासी लाख जीवन योनियों में यह सर्वश्रेष्ठ है। मानव एक पंचेन्द्रिय प्राणी है। चेतना का पूर्ण विकास मानव में हुआ है। एक इन्द्रिय वाले जीव, दो इन्द्रिय वाले जीव, तीन इन्द्रिय वाले जीव, चार इन्द्रिय वाले जीव इन्द्रिय विकल कहलाते हैं, क्योंकि संपूर्ण इन्द्रियां इन जीवों में नहीं है। पंचेन्द्रिय प्राणियों में मानव ही सर्वश्रेष्ठ है। पशुओं में भी पांच इन्द्रियां होती हैं किन्तु सोचने विचारने की क्षमता उनमें नहीं होती। मानव और पशु में यही अंतर है कि मानव ज्ञान संपन्न है। इसलिए मानव सर्वश्रेष्ठ है।

मानव तन पाकर यदि मानव में मानवता का विकास न हो तो वह पशु से भी वदतर है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर एक दूसरे के सुख–दुःख से प्रभावित होना उसका धर्म है। यही कुछ ऐसी बाते है जो कि मानव को अन्य पंचेन्द्रिय प्राणियों से अलग करती है। मानव का सार है मनुष्यता, जो हर मनुष्य में पायी जाती है। इसे सुरक्षित रखना और सभी प्राणियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाये रखना मानव का परम कर्त्तव्य है। मानव एक धर्मनिष्ठ प्राणी है। उसे अपने मन को शिव संकल्पों से युक्त करना चाहिए। धर्म इसी आवश्यकता का

प्रतिपादन करने के लिए है। मन को सत्यम् से, वाणी को शिवम् से और चरित्र को सुन्दरम् से युक्त करने का उपक्रम है धर्म। मनुष्यता ही मानव को सर्वोच्च स्थान प्रदान करती है तथा मानव प्रकृति के उस पक्ष पर बल देती है जो प्रेम, मैत्री, दया सहयोग के रूप में अभिव्यक्त होती है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की संवेदना व दया, करुणा का भाव समस्त सृष्टि के जीवधारियों के लिए होता है। अतः अहिंसा इस दर्शन की प्रतिष्ठा के लिए सबसे अनिवार्य शर्त हैं। मानव जीवन में कर्म को पूर्ण महत्व दिया गया है और यह स्वीकार किया गया है कि मानव की श्रेष्ठता का आधार, विकास का आधार जन्म लेने मात्र से नही अपितु कर्म पर आधारित है। कर्म ही मनुष्य को ऊंचा या नीचा बनाता है। भारतीय कर्म की मान्यताओं एवं मानवतावादी कर्म की मान्यता मे मूल अंतर यह है कि भारतीय कर्म सिद्धान्त में मानव के साथ कर्मो का संबंध पूर्व और पाश्चात् रूप से जुड़ा है, जबकि मानवतावाद में कर्म सिर्फ वर्तमान जीवन तक आधारित है। अहिंसा एक सार्वभौमिक मूल्य है जिसे विश्व के सभी धर्म दर्शनों में मान्यता मिली है।